Vol III Issue X April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

बाल पत्रकारिता : दशा और दिशा

अशोक पंकज ,सुनील कुमार

यू॰जी॰सी–जे॰आर॰एफ॰, हिन्दी–विभाग गु॰ ना॰ दे॰ विश्वविद्यालय, अमृतसर
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी–विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर. (पंजाब)।

***सारांश* :-**

आज के युग में सूचना, सामान्य ज्ञान, खबर तथा मनोरंजन मनुष्य जीवन का सशक्त अनिवार्य अंग बन चुका है। इसके अभाव में मनुष्य अपने को अधूरा सा व दूसरों से कटा–कटा सा महसूस करता है। सूचना, ज्ञान और विचार, समाचार इत्यादि को मनुष्य तक पहुँचाने का एकमात्र साधन पत्रकारिता है। हिन्दी में पत्रकारिता शब्द की उत्पत्ति 'पत्र' से हुई है जिसका अभिप्राय 'सूचना' या 'सन्देश' को प्रेषित करने वाला उपकरण है। आरम्भिक दौर में भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति पत्र लिखकर प्रकट की जाती थी। जिस पत्र में समाचार या सन्देश लिखा होता था, उसे समाचार पत्र की संज्ञा दी जाती थी। यही समाचार पत्र हिन्दी के 'पत्र' का पर्याय माना जाता था। तत्पश्चात् आंग्ल भाषा में न्यूज पेपर छपने प्रारम्भ होने लगे जिसमें प्रमुख 'साप्ताहिक', 'पाक्षिक' मासिक' जर्नल थे। हिन्दी में इन्हें 'समाचार पत्र' और जर्नल को 'पत्रिका' कहा गया। युगान्तर एवं समयान्तर में जर्नल से बना शब्द 'जर्नलिज्म' प्रचलित हो गया और पत्र अथवा पत्रिका से, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं से सम्बंधित लेखन कार्यों को 'पत्रकारिता' कहा गया।

***प्रस्तावना* :**

आधुनिक युग में पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' ;श्रवनतदंसपेउद्ध शब्द प्रयोग होता है। 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण, दैनिक–गतिविधियों, कार्यों का जिसमें विवरण प्रकाशित होता है, उसे 'जर्नल' की संज्ञा दी जाती है। "'जर्नलिज्म' फ्रैंच शब्द 'जर्नी' से निकला है जिसका तात्पर्य है– प्रतिदिन के कार्यों अथवा घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना। पत्रकारिता मोटे तौर पर प्रतिदिन की घटनाओं का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करती है।"

20वीं सदी तक गम्भीर समालोचनाओं तथा विद्वानों द्वारा लिखित रचनाओं को प्रकाशित करने वाली पत्रिकाओं के लिए ही 'जर्नल' शब्द का प्रयोग होता था लेकिन 21वीं सदी तक आते–आते पत्रकारिता का इतना विस्तार एवं विकास हो गया कि जनसंचार के सम्पूर्ण साधन यथा आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र–पत्रिकाएँ, फिल्में इसी के अन्तर्गत आ गए।

पत्रकारिता शब्द एक व्यापक और बहुआयामी शब्द है। इसमें मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन छिपा है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी रूचि और प्राथमिकता होती है। वह पत्रकारिता के माध्यम से ही अपनी जिज्ञासा की भूख मिटाना चाहता है। पत्रकारिता प्रिंट मीडिया, दृष्य–श्रव्य माध्यम को प्रस्तुत करने की एक कला है जिसमें राजनीति से लेकर नौकरी, सिनेमा, नए फैशन, धर्म और योग, खेल, वस्तुओं का दैनिक भाव, चिकित्सादि में नए अनुसंधान, पुस्तक समालोचना, वर–वधू की तलाश, व्यावसायिक, खेतीबाड़ी से सम्बंधित नई सूचनाएं, मौसम की अपेक्षित जानकारी, ग्रीष्मकालीन रेलगाड़ियों के परिचालन,' सरकार की नीतियाँ ; उनके कार्यों आदि की जानकारी पत्रकारिता में प्रतिष्ठित है, जो आम जनता तक पहुँचाती है, साथ ही जनाकांक्षाओं की सही तस्वीर सत्ता के समक्ष प्रस्तुत करने का दायित्त्व भी निभाती है जिस कारण यह प्रभावशाली आविष्कार और पाँचवा वेद के रूप में मान्य हैं। "पत्रकारिता आधुनिक ज्ञान की एक ऐसी विधा है, जिसमें शुभ और समदृष्टि का आलोक है, लोक मंगल का भाव है, असत्य, अशिव और असुन्दर के विरूद्ध सत्यं, शिवं, सुंदरम् का उद्घोष है, जो समय और समाज के संदर्भ में सचेतन दृष्टि रखती है और आम जन को दायित्त्व से परिचित कराने में सक्रिय योगदान देती है।" पत्रकारिता ज्ञान रूपी दीपक है जो अंधेर और अंधेरे की पहचान कराती है और समस्या के समाधान की दिशाओं पर रोशनी भी डालती है।

आधुनिक युग में पत्रकारिता केवल समाचार पत्र–पत्रिकाओं तक ही सीमित नहीं रही, अपितु संचार के विभिन्न माध्यम यथा दूरदर्शन, रेडियो, टेलीविज़न, फिल्म, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों पर भी इसने अपना विशिष्ट अधिकार जमा लिया है जिसके द्वारा देश की भिन्न–2 समस्याओं, विभिन्न योजनाओं के अतिरिक्त विदेश की राजनीतिक समीकरण, आर्थिक नाकाबंदी के प्रति जनता को ज्ञान प्रदान किया जाता है। जिस कारण पत्रकारिता ने अपने सीमित क्षेत्र से निकलकर विभिन्न क्षेत्रों को अपने में समावेशित कर लिया है। अतः पत्रकारिता के संदर्भ में खोजी या अनुसंधानात्मक पत्रकारिता, ग्रामीण पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, विकास पत्रकारिता, संदर्भ पत्रकारिता, संसदीय पत्रकारिता,

खेल पत्रकारिता, रेडियो पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, शिक्षक पत्रकारिता, साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता, अन्वेषणात्मक पत्रकारिता आदि प्रमुख आयाम या क्षेत्र हैं।

उपरोक्त पत्रकारिताओं का प्रवेश आधुनिक युग के विभिन्न क्षेत्रों में तीव्रगति से हो चुका है। इन पत्रिकाओं में से बाल पत्रकारिता या बाल साहित्य हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि बाल साहित्य बालक के मस्तिष्क को निरोग बनाने एवं उनके मस्तिष्क का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल साहित्य से अभिप्राय है– बच्चों का साहित्य। जो साहित्य बच्चों के मन एवं मनोभाव को देख–परखकर लिखा गया हो, उन्हें बाल साहित्य कहा जाता है।

बाल साहित्य का आर्विभाव बच्चे के जन्म के साथ माना जाता है। शिशुवस्था में बच्चा अपनी माता से लोरियां सुनता है। बचपन में राजा–रानी की कथाएँ, कहानियाँ सुना करता है। आज बाल पत्रकारिता या साहित्य उसी का विस्तृत व परिवर्तित रूप है। जिनका प्रसारण, प्रेषित माध्यम प्रमुख टेलीविज़न, रेडियो, मैगज़ीनस, पत्र–पत्रिकाएँ हैं। बाल साहित्य में बाल जीवन से सम्बधित पढ़ाई–लिखाई, खेल–कूद, कविता–कहानी, उपन्यास और नाटक इत्यादि विभिन्न साहित्यिक विधाओं का समावेश होता है जिनका प्रमुख उद्देश्य सम्पादकों को बच्चों के विद्यालयी जीवन की विशिष्ट समस्याओं की तरफ ध्यानामुख कराना, पढ़ाई–लिखाई का बोझ, होमवर्क की परेशानी, बस्तों का बोझ, मँहगी फीस, स्कूली व्यवहार के साथ–साथ बच्चों की प्रतिभा, गतिविधियाँ, शैक्षणिक उपलब्धियों को पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कराना है ताकि अन्य बाल पाठकों पर इसका गहरा मानसिक प्रभाव पड़े, जिससे उनका कौतूहल, भाव और उत्सुकता का समाधान हो सके।

बाल पत्रिका या साहित्य बच्चों को विभिन्न खेल–कूदों के विषय में समाचार प्रदान करने के अतिरिक्त खेलों के नियम, विधि तथा खेलों के इतिहास से भी परिचित कराती है। खेल जगत के साथ–साथ बच्चों को दस्तकारी एवं चित्रकारी करने का ज्ञान भी प्रदान करती है। विज्ञान की नूतन व आधुनिक जानकारियाँ सरल भाषा में बच्चों तक पहुँचाने का यह प्रमुख दायित्त्व समझती हैं। बाल साहित्य के सम्प्रेषण कर्त्ता, सम्पादक का भी यह महत्वपूर्ण कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी बाल कविताओं, कहानियों, उपन्यासों के माध्यम से बच्चों का मानसिक स्तर तथा युगबोध के वर्तमान परिवेश को ध्यान में रखकर राजा–रानी, परी कथा के ज़रिए वर्तमान जीवन के यथार्थ से साक्षात्कार करा सके। उनमें जीवन में प्रगति करने व घोर संघर्ष करने की भावना भर सके।

चूँकि किसी भी भाषा में साहित्य के उद्भव व विकास का श्रेय पत्र–पत्रिकाओं को ही दिया जाता है। हिन्दी भाषा के जगत् में बाल साहित्य इन्हीं पत्र–पत्रिकाओं की देन है। बाल साहित्य का इतिहास दो सौ वर्षों पुराना है। स्वतन्त्रता से पूर्व इसकी दशा अल्प विकसित थी। प्रारम्भ में बच्चों की पत्रिकाओं का शुभारम्भ हस्तलिखित पत्रों से हुआ जो विभिन्न स्थानों से निकल रहे थें। इन हस्तलिखित पत्रों का मूलाधार स्कूल और शिलाएँ थीं। इसके अतिरिक्त कहीं–कहीं दीवार पत्र या श्यामपट पत्र भी बच्चों के लिए विभिन्न स्थानों से निकलते थे। जो पत्रिकाएँ स्कूलों से निकलती थी आज की पत्रिकाएँ उन्हीं का विस्तृत रूप दिखाई पड़ती है। सर्वप्रथम बाल पत्र–पत्रिकाओं का उद्भव भारतेन्दू युग से माना जाता है। "हिन्दी में बाल पत्रों की परम्परा को जन्म देने वाले 'भारतेन्दू हरिश्चन्द्र' थे। उन्होंने सन् 1874 में 'बाल–बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था और उसका पहला अंक 1 जून 1874 को प्रकाशित हुआ। इसके मुद्रक संपादक तथा प्रकाशक भारतेन्दू हरिश्चन्द्र ही थे। यह 'रॉयल अठपेजी' से निकलती थी और इसमें 8 से 12 पृष्ठ होते थे।"

तत्पश्चात् भारतेन्दू युग में ही सन् 1882 में 'बाल दर्पण' मासिक पत्रिका प्रकाशन में आई जो कि बच्चों की सबसे प्राचीन पत्रिका थी। "भारतेन्दू युग में बाल–पत्रकारिता की यात्रा 'बाल दर्पण' से आरम्भ होती है। 1882 में इसका प्रकाशन हुआ। भाषा और विकास की दृष्टि से भले ही इसका महत्त्व आज न हो, तो भी इसका अपना ऐतिहासिक प्रदेय है।"

'बाल दर्पण' पत्रिका के पश्चात् लम्बे समय तक किसी भी पत्रिका का प्रकाशन नहीं हुआ। यदि कहीं–कहीं पत्रिका प्रकाशित होती तो उनकी आयु अत्यन्त अल्प होती थी। सन् 1914 तक पत्रिका साहित्य धीमी गति से चल रहा था। वर्ष 1914 से बाल साहित्य की दिशा में तेजी से प्रगति हुई। इस प्रगति से बच्चों की कविता 'विद्यार्थी' का जन्म हुआ। यह पत्रिका उस समय की सर्वश्रेष्ठ बाल मासिक पत्रिका थी। समयान्तर उपरांत 'कमल' बाल पत्रिका का उद्भव हुआ। "सन् 1934 में ही बच्चों की एक प्रतिनिधि पत्रिका 'कमल' का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। इसका प्रकाशन श्री संतराम 'विचित्र' के संपादन में लाहौर से होता था।" इसके पश्चात् वर्ष 1947 में बच्चों की मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई जिसका नाम 'बाल–बोध' पत्रिका था।

''जनवरी 1947 में ठाकुर श्री नाथ सिंह के संपादन में प्रयाग से 'बालबोध' नामक बच्चों की एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन बालकों के साथ–साथ बालिकाओं के भी हित में था।" वर्ष 1947 के पश्चात् विभिन्न पत्रिकाएँ यथा 'वानर', 'खिलौना', 'कुमार', 'बालक' इत्यादि ने बाल पत्रिकारिता के क्षेत्र में अपना ऐतिहासिक उपादेयता बनाए हुए हैं।

इसके पश्चात् भारत में स्वाधीनता की लहर दौड़ पड़ी। स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रान्तिकारी बदलाव आया। परिणामस्वरूप नवीन मासिक बाल–पत्रिकाएँ उभर कर सम्मुख आई जिनमें से 'बाल–भारती', 'मुकुल', 'जीवन–शिक्षा', 'शेरसखा', 'रानी बिटिया', 'वैज्ञानिक बालक', 'मिलिंद', 'पराग' और 'नंदन' प्रमुख हैं। तत्पश्चात् द्विवेदी युग का समय प्रारम्भ हो गया। द्विवेदी युग में भी 'चुन्नु–मुन्नु' जैसी बाल–पत्रकारिता प्रकाशित हुईं। "द्विवेदी युग की बाल–पत्रिकाओं में चुन्नु–मुन्नु का भी महत्त्व है। अजन्ता प्रेस, पटना से पं. जयनाथ मिश्र के संपादन में चुन्नु–मुन्नु का प्रकाशन हुआ।"

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् का युग बाल–पत्रकारिता की दृष्टि से स्वर्ण युग माना जाता था। साठोत्तरी समय में बाल पत्रकारिता में तीव्र गति से क्रान्ति आई। जिसके कारण 'बेसिल बाल शिक्षा' मासिक बाल पत्रिका, प्रमिला भार्गव द्वारा प्रकाशित हुईं। तत्पश्चात् 'चंपक' ने पत्रिका जगत में अपना कदम रखा जो आज भी बाल साहित्य की श्री वृद्धि करने में संलग्न हैं। वर्ष 1968 में ही दिल्ली से 'चंपक' नामक बच्चों की पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। आरम्भ में यह पत्रिका मासिक रूप में प्रकाशित होती थी।" इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर आज तक हिन्दी बाल साहित्य जगत में ढेर सारी बाल पत्रिकाएँ प्रकाश में आई तथा उनमें प्रकाशित अनेक रचनाएँ बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने का सशक्त माध्यम बनीं।

प्रत्येक बाल पत्रिकाओं में बच्चों के लिए विभिन्न ज्ञानवर्धक पठनीय सामग्री पाई जाती है। इन बाल पत्रिकाओं में बच्चों के मानसिक स्तर अनुसार प्रमुख स्तम्भ बने होते हैं। निम्न कुछ बाल पत्रिकाओं के नाम तथा उनमें प्रकाशित होने वाले प्रमुख स्तम्भों के नाम उल्लेखित है–

बाल पत्रिका का नाम	प्रमुख स्तम्भ
मुन्ना	यह मासिक पत्रिका है। प्रमुख स्तम्भ– 'ज्ञान–विज्ञान', 'कसरत दिमाग की', 'खेल खिलाड़ी', 'आओ सीखें', 'तोता राम', 'यह भी खूब रही' इत्यादि।
गुरूचेला	यह मासिक बाल पत्रिका है। प्रमुख स्तम्भ–'कविताएँ', 'लेख', 'कहानियाँ' तथा 'सृजनात्मक कार्य', 'बाल मनोविज्ञान के अनुरूप' इत्यादि।
बाल रंगभूमि	यह मासिक बाल पत्रिका है। प्रमुख स्तम्भ–'चुटकुले', 'पहेलियाँ', 'कहानियाँ' और 'ज्ञान–विज्ञान की रचनाएँ'।
चन्द्र खिलौना	यह मासिक बाल पत्रिका है। प्रमुख स्तम्भ–'पहेलियाँ', 'कविताएँ', 'हंसगुल्ले', 'रंग भरना' इत्यादि।
चमाचम	यह मासिक बाल पत्रिका है। स्तम्भ– 'चुटकुले', 'कविताएँ', 'कहानियाँ' तथा 'पहेलियाँ' इत्यादि।
बाल दर्शन	प्रमुख स्तम्भ–'स्कूल में बालक', 'बाल स्वास्थ्य', 'ज्ञान मंथन' इत्यादि।
हंसती दुनिया	स्तम्भ–'सबसे पहले', 'डॉ. अंकल के उत्तर', 'कभी न भूलो', 'क्या आप जानते हैं', 'पढ़ो और हँसो', 'रंग भरो प्रतियोगिता', 'आपका पत्र मिला' इत्यादि।
शिशु रंग	प्रमुख स्तम्भ– 'खेल जगत', 'ज्ञान', 'डॉ. की सलाह', 'कार्टून', 'फीचर', 'मुस्करा लाडले मुस्करा', 'शीर्षक बताओ प्रतियोगिता', 'कहानी लिखो प्रतियोगिता', 'रंग भरो प्रतियोगिता' इत्यादि।
बाल पत्रिका	स्तम्भ– 'बातचीत', 'पत्र मिला', 'नन्ही कलम से', 'समाचार–दर्शन', 'हंसगुल्ले' इत्यादि।
लोटपोट	प्रमुख स्तम्भ– 'हास्य और व्यंग्य', 'साहसिक और प्रेरणादायिक रचनाएँ' इत्यादि।
नन्ही मुस्कान	प्रमुख स्तम्भ–'समाचार दुनिया', 'हास्य व्यंग्य', 'हँसगुल्ले' इत्यादि।
नन्हें–मुन्ने	प्रमुख स्तम्भ–'बूझो तो जानो', 'कुछ आश्चर्यजनक मगर सत्य', 'पत्र मित्र बनाओ', 'रंग भरो', 'सैर–सपाटा' इत्यादि।
चंपक	प्रमुख स्तम्भ– 'कविताएँ', 'कहानियाँ', 'हंसगुल्ले' इत्यादि।
नन्दन	प्रमुख स्तम्भ–'आओ बात करें', 'एलबम', 'पुरस्कृत कथा', 'आप कितने बुद्धिमान है?', 'चटपट', 'तेनाली राम', 'ज्ञान पहेली', 'चीटू–नीटू', 'पत्र–मिला', 'नई पुस्तकें' तथा 'पत्र मित्र' इत्यादि।
नन्हें सम्राट	प्रमुख स्तम्भ–'आपस की बात', 'आपके मित्र', 'दिमागी कसरत', 'रंग भरो प्रतियोगिता', 'पत्र–मित्र', 'हा ही ही ही हू हू हैं' इत्यादि।
सुमन सौरभ	प्रमुख स्तम्भ– 'अपना भाषा ज्ञान बढ़ाइए', 'खट्टी–मिठ्ठी खबरें', 'आपने लिखा', 'प्रेरक प्रसंग', 'चीजें कैसे बनती है?', 'चीजें कैसे काम करती है', 'उलझ गए', 'सोचें और बताए' इत्यादि।
चकमक	प्रमुख स्तम्भ– 'बच्चों की रचनाएँ', 'उनके मित्र', 'उनके मित्र तथा उनसे सम्बंधित सामग्री' इत्यादि।
अच्छे भैया	प्रमुख स्तम्भ– 'बाल वाटिका', 'शीर्षक बताइए प्रतियोगिता', 'बूझों और बताओ', 'नवीन ज्ञान', 'पहेली' इत्यादि।
बाल हंस	प्रमुख स्तम्भ– 'कविताएँ', 'कहानियाँ', 'रोचक लेख', 'चित्रकथा', 'ढोलराम', 'राजाहर दौल', 'बिज्जू', 'कूँ–कूँ', 'उजली छाया', 'सम्पादकीय', 'शब्द परिचय', 'आती–पाती', 'नयी प्रतियोगिता', 'फोटो फीचर', 'प्रतियोगिता', 'खबर', 'महक', 'नन्हीं कूंची', इत्यादि ।

आधुनिक युग में समाचार पत्र मनुष्य के ज्ञानार्जन का एक अनिवार्य विशेष अंग बन चुका है। यह सभी वर्गों के लिए चाहे वह बच्चा हो या व्यस्क, प्रौढ़ हो या बुजुर्ग, शिक्षित हो या अशिक्षित भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री प्रदान करता है। बच्चों के लिए तो समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। दैनिक समाचार पत्रों में बच्चों के ज्ञान में विकास करने हेतु बाल स्तंभ या बालकों के लिए पृष्ठ मुद्रित होते हैं। अधिकांश दैनिक समाचार पत्रों के शनिवार तथा रविवारीय संस्करण के साथ अलग रूप से चार पृष्ठीय या मैगज़ीन सम्मिलित होती है जिनमें बच्चों से सम्बधित सामग्री यथा 'बाल पन्ना', 'रचनाएँ', 'प्रश्नोत्तरी', 'रंग भरना', 'अन्वेषण का ज्ञान', 'मिलान करना', 'अन्तर ढूँढना', 'बिन्दू को मिलाना', 'चुटकुले', 'विज्ञान जगत की सूचनाएँ', 'कहानियाँ' इत्यादि प्रकाशित होती हैं। ये पृष्ठ या मैगजीन बाकी पत्रों की तुलना में रंगीन व आकृर्षक साज–सज्जा के साथ प्रकाशित होते हैं।

निम्न कुछ दैनिक समाचार पत्रों के नाम तथा उनमें प्रकाशित होने वालें बाल स्तंभों के नाम उल्लेखित है–

दैनिक समाचार पत्र का नामस्तंभ का नाम

1.पंजाब केसरी	बाल केसरी
2.दैनिक जागरण	जोश, सप्तंरग
3.अजीत समाचार (पंजाबी में)	बाल संसार
4.रोजाना स्पोकसमैन (पंजाबी में)	साप्ताहिकी
5.सन्डे ट्रिब्यून (इंगलिश में)	दा स्पैकट्रम
6.पंजाबी ट्रिब्यून (पंजाबी में)	पंजाबी ट्रिब्यून, मैगज़ीन
7.जगबाणी (पंजाबी में)	बाल जगत
8.अमर उजाला	बच्चों का कोना
9.नव भारत	बच्चों की फुलवारी
10.हिन्दुस्तान	बच्चों की दुनिया
11.जागरण (इंदौर)	बाल जागरण
12.जागरण (कानपुर)	बाल जगत
13.दैनिक भास्कर	बाल भास्कर
14.नव भारत टाइम्स	बाल भारत
15.दैनिक नवज्योति	बाल जगत

आदि।

उपरोक्त दैनिक समाचार पत्रों में जो बाल स्तंभ है, उनमें अधिकतर बच्चों की ही रचनाएँ प्रकाशित होती हैं।

इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता

बाल साहित्य की दुनिया को प्रसारित करने में इलेक्ट्रॉनिक साधन यथा टेलीविज़न, आकाशवाणी दूरदर्शन, फिल्मों के अतिरिक्त बाज़ार में उपलब्ध सीडीज़ ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन साधनों में से टेलीविज़न, फिल्में तथा सीडीज दृश्य–श्रव्य साधन हैं जिनके माध्यम से बच्चे कार्यक्रम को कानों द्वारा सुनकर तथा आँखों द्वारा देखकर मनोरंजन व ज्ञान अर्जित कर सकते हैं,जबकि आकाशवाणी दूरदर्शन सिर्फ श्रव्य साधन है। निम्न भिन्न–भिन्न साधनों द्वारा प्रसारित होने वाले बाल कार्यक्रमों के नाम इस प्रकार हैं–

टेलीविज़न

टेलीविज़न बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने का एक सशक्त साधन है। इसमें बच्चों के लिए प्रसारित होने वाले कार्यक्रम इस प्रकार हैं–

- जय श्री कृष्ण
- अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
- गली गली सिम–सिम
- गोलू की गोगल्स
- शाका लाका बूम–बूम
- शरारत
- चम्बाला इन्वेस्टीगेशन एजैंसी
- छोटा भीम
- लिटल कृष्ण
- सोनपरी
- हातिम
- द मैजिक मैकअप बॉक्स
- प्रिंसीस डोली और उसका मैजिक बैग
- डिस्कवरी चैनल
- विक्रम बेताल
- अलिफलैला
- अल्लादीन
- बारबी
- बाल कृष्ण

•टोम एण्ड जैरी
•रूबी डूबी हब हब
•शक्तिमान
•थोड़ा जादू थोड़ी नज़ाकत
•चमत्कारी टेलिफोन
•चाई एण्ड मी
•धूम मचाओ धूम
•दी स्टोन ब्वाय
•इन्द्रधनुष
•द्वारकाधीश भगवान श्री कृष्ण
•पोगो चैनल
•कार्टून चैनल
•इनसाइक्लोपीडिया
•ज्ञान दूरदर्शन
•डोरेमोन
•तरंग
•छुट्टी–छुट्टी
•बाल वीर–आदि।

फिल्में

बच्चों से सम्बंधित बहुत सारी फिल्में सिनेमा घरों में लगाई जाती है जिससे बच्चों का मानसिक विकास होता है। कुछ बाल फिल्मों के नाम इस प्रकार हैं–

•तारे ज़मीन पर
•होम अलोन
•जंगल बुक–2
•गुलिवर्स ट्रेवल
•सनों वाईट एण्ड दी सेवन ड्राफ्ट
•द माउस एण्ड मोटर साईकिल
•थैंक्स माँ
•जासूस बंदर
•द माउस एण्ड हिज चाईल्ड
•हेरी पोटर एण्ड द चेम्बर ऑफ सिक्रेटस
•सुपरमैन
•टोम एण्ड जेरी : द मूवी
•द ब्लैक होल
•एलाइस इन वण्डरलैंड
•जोनी ट्रीमेन
•छिल्लर पार्टी
•द माउस हण्ट
•नन्दू का राजा
•मकड़ी
•हेरी पोटर–आदि।

आकाशवाणी दूरदर्शन पर भी बालोपयोगी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित है–

•बाल संगीत

•बच्चों से विचार विमर्श करना
•बाल कहानियाँ
•उनके पसंदीदा गीत सुनना–आदि।
•स्वास्थ्य सम्बधी जानकारी देना
•नये गीतों के माध्यम से मनोरंजन करना

बाज़ार में कुछ महत्वपूर्ण बालोपयोगी सीडीज भी उपलब्ध हैं जो बच्चों के ज्ञानवर्धन में सहायक हैं। सीडीज के नाम इस प्रकार हैं–

•दादी माँ की कहानियाँ
•योगाभ्यास
•खेल–खेल में सीखें क.ख.ग.
•मध्य और पश्चिम भारत पर्यटन
•शिष्टाचार
•बाल गणेश
•श्रीतिरूपति बाला जी
•आओ नाचें गाएं
•छू लेगें आकाश
•नीति कथा
•अक्षर ज्ञान
•अभिमन्यु
•सामान्य ज्ञान
•शिशु विहार
•प्राथमिक शिक्षा
•आओ गीत गाएँ
•आओ झूमे गाएँ
•पंचतन्त्र
•स्वर ज्ञान
•श्री मद्भगवत गीता
•घटोत्कच
•महाभारत
•रामायण
•टेसू राजा बीच बाज़ार
•नन्हें–मुन्ने गीत, आदि

हिन्दी साहित्य संसार में ऐसे बहुत से साहित्कार हैं जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण कृत्तियों में बाल साहित्य को पनाह दी। आज युग की सबसे बड़ी माँग है कि बच्चों के ज्ञानवर्धन के लिए कुछ बाल साहित्य लिखा जाए। इसी मांग से प्रभावित होकर कुछ साहित्यकारों ने अपने साहित्य में बाल–कहानी, उपन्यास, नाटक या अन्य विधाएं लिखने के लिए बीड़ा उठाया। निम्न कुछ साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय है जिनकी कृत्तियों में बाल साहित्य की झलक मिलती है। बाल साहित्य के क्षेत्र में रमेशचन्द्र शाह कृत 'हाथी की करतूत', डॉ. रवि कुमार 'अनु' द्वारा रचित 'सत्यवादी हरिशचन्द्र', 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', राजीव कुमार सक्सेना कृत 'मेरी इक्यावन शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ', 'हमारा आकाश', 'भूल ना जाना बोल बड़ों के', 'पढ़ो कहानी ज्ञान बढ़ाओ', 'खगोल विज्ञान के अविष्कार', 'आसमान के तारे', 'जंगल की शिक्षाप्रद कहानियाँ', जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'कितनी जमीन', 'जीवन मूल', 'तीन जोगी', 'देर है अन्धेर नहीं', 'आम बराबर गेहूँ', 'लाल सरोवर', 'दो साथी', 'प्रेम में भगवान', 'मुरख राज', 'धर्मपुत्र', 'किसका रूपया', 'खोखला ढोल', 'रामू की दीदी', 'हमसे सयाने बालक', 'सुंदरिया', 'वह बेचारा', 'तमाशा' (प्रेम में भगवान–संग्रह), 'बाहुबली', 'चिड़िया की बच्ची', 'नारद का निवेदन', 'पाजेब', 'गाँधी कुछ स्मृति', 'अपना पराया', 'इनाम', 'जंगल की आवाज', 'खेल' (कहानी–संग्रह), डॉ. सुरेन्द्र कुमार कृत 'खेल–खेल में', 'अब्बक डब्बक', सुरेश कांत द्वारा रचित 'कुट्टी', 'रोटी कौन खाएगा', 'चलो चाँद पर घूमें', 'विश्वप्रसिद्ध कहानियाँ' (चार भाग), क्षमा शर्मा द्वारा लिखित 'शिब्बू पहलवान', 'पप्पू चला ढूंढने शेर' (हिन्दी अकादमी से सम्मानित), 'पन्ना धाय', 'इक्यावन बाल कहानियाँ', कमलेश बख्शी कृत 'कच्चे–पक्के रास्ते', 'सुरंग से बाहर', 'अंतहीन भटकन', 'विधिचंद', ईशान महेश कृत 'पवित्र उत्तर', 'शरारत का फल', मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'कलवा', ' शरत् चन्द्र', भगवान दास मोरवाल कृत 'कलियुगी पंचायत', नासिरा शर्मा द्वारा रचित 'संसार अपने–अपने' (हिंदी भाषा में), 'अपनी–अपनी दुनिया' (उर्दू), 'किस्माए गुस्साए मा '(फारसी), ' मरमेड एण्ड ब्रोकन जार–मौलिक रूप में अंग्रेजी में लिखित', अमरकान्त द्वारा लिखित 'नेऊर भाई', 'वानर

सेना', 'खूँटा में दाल है', 'सुग्गी चाची का गाँव', 'झगरू लाल का फैसला', 'एक स्त्री का सफर', 'मँगरी', 'बाबू का फैसला', 'दो हिम्मती बच्चे, सुभाष सेतिया कृत 'बूंद–बूंद से सागर', नागार्जुन द्वारा रचित 'अयोध्या का राजा', 'रामायण की कथा–वीर विक्रम', रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'मिर्च का राजा', 'धूप–छाँह', 'चितौड़ का साका', 'भारत की सांस्कृतिक कहानी' सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा कृत 'मुकुल', 'नक्षत्र', 'त्रिधारा', 'सभा का खेल' डॉ. श्यामसिंह 'शशि' द्वारा रचित 'समाज के सुपुत्र', 'राहुल', 'आज के अस्त्र', 'समाज के सपूत', 'एक ही जादू','अच्छे बच्चे कितने सच्चे' संत कुमार टण्डन 'रसिक द्वारा कृत 'गाओ गुनगुनाओं', 'गीत हमारे कण्ठ हमारे' डॉ. हरिशचन्द्र वर्मा द्वारा लिखित' नई पीटी–नये स्वर' (काव्य), 'संकल्पों के स्वर' डॉ. उषा यादव द्वारा रचित 'पारस पत्थर' डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'चन्द्र' द्वारा कृत 'नाग देवता की अंगूठी', 'गुरु दक्षिणा', 'नींद का चक्कर' डॉ. शिवसागर त्रिपाठी द्वारा कृत 'शारण रक्षण' चन्द्रभानू आर्य द्वारा लिखित 'बाल भाषण', 'किशोर भाषण' डॉ. किशोर काबरा द्वारा रचित 'तितली के पंख', 'टिमटिम तारे', 'बाल रामायण', 'बाल कृष्णायन साले की कृपा', 'आज यौवन ने पुकारा देश को' डॉ. हनुमन्त राय 'नीरव' कृत 'महाबली मिक्कू तथा अन्य कहानियाँ', 'सोने का पंख', 'अली कोगिमा का मुकद्मा'जगदीश चन्द्र 'जीत' कृत 'बच्चों की कहानियाँ', 'नानी कहो कहानी' यज्ञदत्त शर्मा कृत 'हमारी दुनिया'श्री शरण द्वारा लिखित 'मेरे देश की लोक कथाएं', 'कहानियाँ नीति की','वीर महापुरूष' 'भारत के नये तीर्थ' 'दूर हटो ए दुनिया वालों', 'संघर्ष', 'चक्रवर्ती', 'विज्ञान चमत्कार', 'अपना मुन्ना', 'विज्ञान के मनोरंजन', 'स्वामी रामतीर्थ कथाओं में', 'हंस मामा', 'आकाश के दीये', 'स्वामी रामतीर्थ की बोध कथाएँ', 'हमारा सूरज', 'महापुरूषों के संस्मरण', 'गगन से पृथ्वी तक', 'कहानियाँ नीति की', 'पाँच हिन्दुस्तानी', ' खूब लड़ी मर्दानी', 'हमारी पृथ्वी', 'हमारा चन्द्रमा मालती जोशी कृत 'दादी की घड़ी', 'जीने की रात', 'परीक्षा और पुरस्कार', 'स्नेह के स्वर', 'सख्या सिंगार' गिरीश पंकज द्वारा रचित 'एक हमरा देश, मेरा देश महान'लीलाधर मंडलोई कृत'पेड़ भी चलते हैं' (बाल कथाएं), 'चांद का धब्बा (बाल कहानी–संग्रह) प्रभाकर माचवे द्वारा लिखित 'असम', 'केरल', 'महाराष्ट्र', 'आदिवासी बच्चे' तथा नीलेश रघुवंशी कृत 'एलिस इन वंडरलैंड', 'डॉनक्विगजोट',' झाँसी की रानी आदि–आदि।

उपरोक्त साहित्यकारों के अतिरिक्त अनेक रचनाकार हुए हैं जिनका हिन्दी बालोपयोगी साहित्य में सर्वोच्च स्थान है जैसे–

'डॉ. शरद सिंह', 'उषा पुरी', 'अध्यापक जहूर बख्श', 'प्रदीप', 'मनोहर पुरी', 'पुष्पा जोशी', 'पंकज चतुर्वेदी', 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी', 'राहुल सांकृत्यायन', 'सुदर्शन', 'मालती बसंत', 'प्रेमचन्द', 'शिवप्रसाद सिंह', 'श्री लाल शुक्ल', 'डॉ. रामदरश मिश्र', 'सुरेश सलिल', 'रमेश थानवी', 'जयशंकर प्रसाद', 'प्रतिभा आर्य', 'शैलेन्द्र प्रसाद', 'सत्य प्रकाश', 'प्रेमचंद महेश', 'नागेन्द्र नाथ', 'शहीद देभाबाई', 'डॉ. हरीश प्रधान', 'विद्याधर प्रकाश', 'शील प्रभा', 'जयवर्धन', 'महाश्वेता देवी', 'ज्योतिर्मय प्रसाद', 'अरुण कुमार', 'रेनू गुप्ता', 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी', 'श्री प्रसाद', 'संतोष कौशिक', 'भारतेन्दू हरिशचन्द्र', 'हबीर तनवीर', 'सुशील कुमार सिंह', 'गिजू भाई', 'मृदुला पंडित', 'श्री श्यामसुन्दर त्रिपाठी', 'उमि कृष्ण', 'वीरेन्द्र तँवर', 'निरंकारदेव सेवक' आदि।

निष्कर्ष

आज का युग मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण का युग है। इस मशीनी बियाबान में प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीविका कमाने हेतु अपने घर से, परिवार से अलग होकर देश–विदेश में स्थानांतरित हो रहे हैं। बच्चे जो पहले अपनी दादी–दादा या नानी–नाना से बाल कथाएँ यथा राजा–रानी की कथाएँ, परियों की गाथाओं के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक बातें सुनते थें,आज वे इस मशीनी बियाबान के प्रभाव से इन सब बाल साहित्य से वंचित होते जा रहे हैं। यहीं नहीं अभिभावक अपने बच्चों को आवासीय विद्यालयों में पढ़ाने में ज्यादा समझदारी समझते हैं जिस कारण बच्चे बाल कथाओं या साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। इस दूरी को कम करने के लिए बाल पत्रकारिता या बाल साहित्य, मैगज़ीनस, पत्र इत्यादि बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आज स्कूलों, विद्यालयों में बच्चों की शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में ढेर सारी पुस्तकों को शामिल किया जा रहा है लेकिन किसी भी विद्यालय में कहीं पर भी बाल पत्रकारिता के अध्ययन–अध्यापन की अलग से व्यवस्था नहीं है और ना ही बाल पत्रकारिता पढ़ाई जा रही है। यदि ऐसी ही स्थिति रही तो बच्चों का सर्वांगीण विकास रूक जाएगा व उनका बचपन या बाल्यावस्था नीरस बन जाएगी।

वर्तमान की बाल पत्रकारिता व्यावसायिकता के व्यूह में फँसी हुई हैं आज बाल साहित्य लिखने वाले अनेक प्रतिभाशाली लेखक, रचनाकार हैं लेकिन वे धनोभाव के कारण अपनी बाल रचनाएँ, साहित्य प्रकाशित नहीं करा सकते, क्योंकि कई प्रकाशन संस्थान पैसों के बल पर ही बच्चों की पत्रिकाएँ निकाल रहे हैं। इनके संस्थान से प्रकाशित बाल–पत्रिकाओं का दृष्टिकोण सिर्फ़ व्यावसायिक ही होता है। इसलिए बाल साहित्य के संदर्भ में जो भी सामग्री प्रकाशित की जाती है, उनको प्रकाशित करने के लिए प्रकाशन संस्था की ओर से कम पैसे लेने चाहिए या फिर मुफ्त में प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि प्रत्येक साहित्यकार या लेखक अपनी अधिक से अधिक बालोपयोगी कृत्तियों, साहित्यों की सृजना कर सके।

वर्तमान युग में गरीबी ने अपना मुँह फाड़ा हुआ है इस गरीबी से प्रभावित होकर अभिभावक अपने बच्चों को काम–धन्धे, व्यवसाय में लगा रहे हैं। मालिक द्वारा बच्चों का शोषण किया जाता रहा है। बाल पत्रकारिता के माध्यम से बच्चों को अधिकारों व कर्त्तव्यों से अवगत करना चाहिए। देश में बढ़ रही ज्वंलत समस्या जैसे– नशाखोरी, बीडी–सिगरेट का सेवन, मद्यिरापान, ड्रग एडिक्स आदि के कारण बढ़ रहे कुप्रभाव व इनको खत्म करने के मुख्य उपाय इसमें शामिल किया जाना चाहिए। वातावरण प्रदूषण पर आज भिन्न–भिन्न कारकों द्वारा कुप्रभाव डाला जा रहा है जिसके कारण ओजोन परत नष्ट हो रही है, वातावरण प्रदूषण बढ़ रहा है तथा कई प्रकार की बीमारियाँ अपना घर बना रही है। बाल पत्रकारिता के माध्यम से वायुमण्डल तथा इस पर पड़ने वाले कुप्रभावों का उल्लेख करना अति आवश्यक है।

समकालीन परिवेश में नित रोज़ नई–नई बीमारियाँ पनप रही हैं, नये–नये वैज्ञानिक अनुसंधान हो रहे हैं नई–नई दवाईयाँ बाज़ार में आ रही हैं यहाँ तक कि लाईलाज बीमारी के उपचार हेतु विदेशों में दवाईयाँ भी बन चुकी हैं इसके अतिरिक्त जीव विज्ञान तथा रसायनिक विज्ञान से सम्बधित ज्ञान को पत्रकारिता में शामिल किया जाना चाहिए।

चूँकि किसी भी बाल पत्रिका की उपयोगिता और प्रसिद्वि उसके संपादक की योग्यता, प्रतिभा और क्षमता पर निर्भर करती है। बाल पत्रकारिता के संपादक को कुशल बाल साहित्य रचनाकार तथा बाल मनोविज्ञान का स्पष्ट ज्ञाता होना चाहिए, क्योंकि बाल पत्रिकाएँ ही एक

बना रही है। बाल पत्रकारिता के माध्यम से वायुमण्डल तथा इस पर पड़ने वाले कुप्रभावों का उल्लेख करना अति आवश्यक है।

समकालीन परिवेश में नित रोज़ नई–नई बीमारियाँ पनप रही हैं, नये–नये वैज्ञानिक अनुसंधान हो रहे हैं नई–नई दवाईयाँ बाज़ार में आ रही हैं यहाँ तक कि लाईलाज बीमारी के उपचार हेतु विदेशों में दवाईयाँ भी बन चुकी हैं इसके अतिरिक्त जीव विज्ञान तथा रसायनिक विज्ञान से सम्बधित ज्ञान को पत्रकारिता में शामिल किया जाना चाहिए।

चूँकि किसी भी बाल पत्रिका की उपयोगिता और प्रसिद्वि उसके संपादक की योग्यता, प्रतिभा और क्षमता पर निर्भर करती है। बाल पत्रकारिता के संपादक को कुशल बाल साहित्य रचनाकार तथा बाल मनोविज्ञान का स्पष्ट ज्ञाता होना चाहिए, क्योंकि बाल पत्रिकाएँ ही एक ऐसा माध्यम हैं जो प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों को शिक्षा देने का काम करती हैं। ये बच्चों को वो ज्ञान प्रदान करती हैं जिनको स्कूलों, विद्यालयों तथा घरों में नहीं सिखाया जाता। इसलिए यदि हम ये कहें कि बाल पत्रिकाएं बच्चों के मानसिक विकास में ज्ञान के नए कपाट खोलती हैं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आज वर्तमान युग में बाल पत्रिकाओं की बहुत बड़ी मांग व आवश्यकता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता ये है कि इसमें भरपूर रोचक बालोपयोगी सामग्री का समावेश हो। क्योंकि कठिन भाषा, बोझिल भाषा तथा थोपी गई शब्दावली को बच्चे कतई पढ़ने में रुचि नहीं लेते। बाल साहित्य में मजबूत व टिकाऊपन होना अति आवश्यक है क्योंकि बच्चे कभी–कभी बाल पत्रिकाओं को पढ़ते–पढ़ते उसके साथ खेलने लग जाते हैं और कभी–कभी तो उस पर सो भी जाते हैं। ऐसी स्थिति में यदि पत्रिका मजबूत व टिकाऊ ना हुई तो वह शीघ्र ही नष्ट हो जाएगी। इसके अतिरिक्त प्रकाशित रचनाओं की विषयवस्तु सर्वथा बच्चों के अनुकूल होनी चाहिए क्योंकि आज का बालक यथार्थ के संसार में सांस ले रहा है। अतः इसमें यथार्थवादी रचनाएँ प्रकाशित की जानी चाहिए। सिर्फ़ आदर्शों की घूँटी दिलाना तथा हवाई कल्पना के महल बनाना ही आज के बाल साहित्य का मुख्य मत्तंव्य नहीं होना चाहिए।

अतः कहना ना होगा कि आज बाल पत्रिकाएँ बच्चों के लिए एक कुशल उपदेशक, सफल अभिभावक, उचित मागदर्शक तथा सच्ची दोस्त हैं।

संदर्भ

1.रविभूषण पांडेय. पत्रकारिता का समाजशास्त्र, दिल्ली : आकृति प्रकाशन, प्र.स. 2009, पृ॰ 38
2.डॉ. जितेन्द्र वत्स. हिन्दी पत्रकारिता, दिल्ली : निर्मल पब्लिकेशन्स, प्र.स. 2008, पृ॰11
3.डॉ. हरिकृष्ण देवसरे. हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन, दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्ज, प्र.स. 1969, पृ॰ 369
4.डॉ. वेदप्रताप वैदिक. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, दिल्ली : हिन्दी बुक सैंटर, पृ॰ 322
5.वीणा : मासिक पत्रिका. अक्तूबर 1934, पृ॰ 995
6.डॉ. सुरेन्द्र विक्रम. हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास, इलाहाबाद : साहित्य वाणी प्रकाशन, प्र.स. 1992, पृ॰ 89
7.डॉ. वेदप्रताप वैदिक. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, दिल्ली : हिन्दी बुक सैंटर, प्र.स. 2001, पृ॰ 322
8.डॉ. सुरेन्द्र विक्रम. हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास, इलाहाबाद : साहित्य वाणी प्रकाशन, प्र.स. 1992, पृ॰ 129

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net